IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की विदेश नीति

डॉ. लता दनेलिया

जीवाजी विश्वविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

किसी भी राश्ट्र की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धान्तों, हितो एवं उद्देश्यों का समूह होता है, जिनके माध्यम से वह राष्ट्र दूसरे के साथ संबंध स्थापित करके उन सिद्धान्तों की पूर्ति करने हेतु कार्यरत रहता है[1] इसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विदेश नीति होती है, जिसके माध्यम से वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने संबंधों का निरूपण करता है। विशिष्ट रूप से सर्वप्रथम माडलस्की ने इसकी परिभाषा करते हुए कहा था कि विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिविधियों को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ढ़ालने की कोशिश करता है।[2]

किसी भी स्वतन्त्र व सम्प्रभु सम्पन्न देश की विदेश नीति मूल रूप में उन सिद्धान्तों, हितों तथा लक्ष्यों का समूह हाती है, जिनके माध्यम से वह दूसरे देशों से सम्बन्ध स्थापित करता है भारत की विदेश नीति के आधारभूत लक्ष्य राष्ट्रीय सुरक्षा व आर्थिक विकास है।[3]

किसी देश की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों के अनुरूप दूसरे देशों के साथ आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक तथा सैनिक विषयों पर पालन की जाने वाली नीतियों का समुच्चय होती है। किसी भी देश की स्थिति एवं वैश्विक परिस्थितियों सदैव एक समान नहीं रहती, इसलिये बदलती अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में राष्ट्रीय हितों के दृष्टिकोण से समयानुसार किसी भी देश की विदेश नीति में परिवर्तन होना स्वाभाविक है यही कारण है कि कोई देश न तो किसी का स्थायी मित्र होता है और न ही स्थायी शत्रु! भारत की जो स्थिति स्वतन्त्रता प्राप्त करने के समय वर्ष 1947 में थी, वैसी ही स्थिति बीसवीं सदी के साठ या सत्तर के दशक में नहीं थी बीसवीं सदी के समाप्त होने तक भारत की स्थिति परिवर्तित हो चुकी थी और अब इक्कीसवीं सदी में इसे दुनिया में तेजी से उभरती हुई विश्व शक्ति के तौर पर देखा जाता है। भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को महत्व देते हुए पड़ोसी

देशों के साथ मधुर सम्बन्ध बनाने तथा अपनी पहचान वैश्विक स्तर पर बनाने हेतु समय – समय पर अपनी विदेश नीति में परिवर्तन किया है।[4]

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को भारतीय विदेश नीति का सूत्र धार माना जाता है। उन्होंने प्रधानमंत्री के साथ–साथ न्याय विदेश मंत्री की भूमिका भी निभाई और वैश्विक निःशस्त्रीकरण, गुटनिरपेक्षता व पंचशील के सिद्धान्तों पर भारत की विदेश नीति की नींव रखी। उन्होंने कहा था ''सारा विश्व इस बात के लिए स्वतन्त्र है कि जैसी नीति चाहे वैसी अपनाएं, किन्तु हम भारतीय तटस्थता की नीति अपनाएगें और सैनिक गठबन्धनों व शीत युद्ध को देने वाले के चक्कर में नहीं पड़ेगे। हम सारे संसार से मित्रता व सद्भाव चाहते है। सबके साथ बन्धुत्व व सहयोग का भाव अपनाना चाहते है। सह–अस्तित्व की नीति शान्ति का अभयदान देती है, युद्ध की सम्भावनाओं को मिटाती है तथा सबकों सहयोग व सद्भावना के सूत्र में बांधती है। यह मानव के दृष्टिकोण में परिवर्तन करती है तथा युद्ध की आशंका की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया से संसार को बचाती है।[5]

भारत की विदेश नीति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए जवाहरलाल नेहरू ने सितंबर 1946 में यह कहते हुए उद्घोश किया था ''वैदेशिक संबंधों के क्षेत्र में भारत एक स्वतंत्र नीति का अनुसरण करेगा और गुटों की खींचतान से दूर रहते हुए संसार के समस्त पराधीन देशों को आत्म निर्णय का अधिकार प्रदान कराने तथा जातीय भेदभाव की नीति का दृढ़तापूर्वक उन्मूलन का प्रयत्न करेगा।'' नेहरू जी का यह कथन आज भी भारत की विदेश नीति का आधार स्तभ है। भारत की विदेश नीति की मूल बातों का समावेश हमारे संविधान के अनुच्छेद 51 में किया गया है। जिसके अनुसार राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देगा, राज्य राष्ट्रो के मध्य न्याय और सम्मान पूर्वक संबंधों को बनाये रखने का प्रयास करेगा राज्य अंतराष्ट्रीय कानूनों तथा संधियों का सम्मान करेगा तथा राज्य अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों को पँच फसलों द्वारा निपटाने की रीति को बढ़ावा देगा।[6]

उद्देश्य :–

1. राष्ट्रीय हित विदेश नीति को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के संदर्भ में सामान्य अभिविन्यास प्रदान करते है।
2. राष्ट्रीय हित निकट भविष्य की स्थिति में विदेश नीति को नियन्त्रण करने वाले मापदण्डों का विकल्प प्रदान करते है।
3. राष्ट्रीय हित विदेश नीति को निरन्तरता प्रदान करते है।
4. इन्हीं के आधार पर विदेश नीति बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप में अपने आपको ढ़ालने में सक्षम हांती है।
5. राष्ट्रीय हित विदेश नीति को मजबूत आधार प्रदान करते है क्योंकि यह समाज के सभन्वित एवं सर्वसम्मति पर आधारित मूल्यों को अभिव्यक्ति करते है।
6. राष्ट्रीय हित विदश नीति के दिशा निर्देशन का कार्य करते है।
7. भारती विदेशी नीति का बुनियादी उद्देश्य भारत में घरेलू परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना है।
8. व्यापक तौर पर हमारी विदेश नीति का उद्देश्य हमारे और हमारी अर्थव्यवस्था के परिवर्तन के दौर में ऐसे ही अनुकूल परिवेश का निर्माण करना है।
9. प्रमुख उद्देश्य :– (अ) (1) राष्ट्रीय सुरक्षा (2) आर्थिक विकास (3) विश्व व्यवस्था
   (ब) अन्य उद्देश्य :– (1) उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंग भेद का विरोध (2) निःशस्त्रीकरण का समर्थन (3) एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका (4) एफ्रो–एशियाई क्षेत्रीय सहयोग (5) संयुक्त राष्ट्र में आस्था (6) सभी राष्ट्रो में मैत्रीपूर्ण संबंध (7) भारतीय मूल एवं प्रवासी भारतीय को सहारा।[7]

सिद्धान्त :–

भारत ने विदेश नीति के उद्देश्यां की पूर्ति हेतु कुछ सिद्धांतों का पालन किया है। ये सिद्धान्त न केवल विदेश नीति के तर्कसंगत विश्लेषण में सहायक होते है बल्कि नीति को निरन्तरता भी प्रदान करते है।

गुट निरपेक्षता का सिद्धान्त – द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एक नये युग का सुत्रपात हुआ, जिसमें तनाव की स्थिति अपनी चरम अवस्था पर थी। इस तनाव को शीत युद्ध का नाम दिया गया। विश्व परस्पर दो, गुटों में बँट गया। एक गुट का नेतृत्व कर्ता अमेरिका था तो दूसरे गुट का नेतृत्व कर्ता सोवियत संघ (रूस) था। परन्तु भारत ने किसी भी शक्ति गुट में शामिल न होने का निर्णय किया। वह सभी देशों के साथ मित्रता के आदर्श और वि”व शान्ति के नतिक मूल्यों में विश्वास रखता था। अतः इसने निर्णय किया कि वह अपनी क्षमता का प्रयोग देश के आर्थिक विकास के

लिए करेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत को न केवल सभी देशों के साथ मित्रता की अपेक्षा थी वरन् वह यह भी चाहता था कि जहाँ से भी संभव हो उसे आर्थिक सहायता प्राप्त हो।[8]

पंचशील सिद्धान्त :–

भारत दर्शन के अन्तर्गत 'वसुधेव कुटुम्बकम' की नीति एक विश्व की भावनाकां प्रोत्साहित करती है। इसका अर्थ यह है कि सभी देश एक दूसरें की व्यवस्थाओं का आदर करें तथा सह–अस्तित्व में रहे। इस प्रकार विभिन्न विचारधाराओं के बीच शान्तिपूर्ण सिद्ध अस्तित्व का आदर करना भी भारत की विदेश नीति का अन्य सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त को वर्ष 1954 में भारत तथा चीन के बीच हुए पंचशील सिद्धान्तों की घोषणा के साथ औपचारिक मान्यता मिले इन सिद्धान्तों में क्षेत्रीय अखण्डता और सम्प्रभुता परस्पर अनाक्रमण का सिद्धान्त आन्तरिक मामले में अहस्तक्षेप, परस्पर मित्रता की भावना तथा सह–अस्तित्व विश्वास की भावना थी।तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि अगर विश्व इन समस्याओं पर कार्य करे तो विश्व की अनेक संस्थाओं का आसानी से निदान हो सकता है। कालान्तर में पंचशील सिद्धान्त को नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय सिक्के का नाम दिया।[9]

औपनिवेशक शोषण तंत्र के विरोध का सिद्धान्त :–

भारत स्वयं लम्बे समय तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद से पीडित रहा था। इसलिये उसने औपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद के प्रत्येक रूप का विरोध किया तथा एशिया व अफ्रीका के उपनिवेशवद तथा साम्राज्यवाद का विरोध किया। स्वतंत्रता के बाद यह निर्णय लिया गया कि भारतीय सैनिकों को जिन्हें अंग्रेज तथा फ्रांस सरकार ने उपनिवेशों में स्वतंत्रता आन्दोलन का दमन करने के लिए भेजा था, वापस बुला लिया जाए। भारत का यह सिद्धान्त उपनिवेशों की जनता के आत्म निर्णय का अधिकार माना गया।[10]

नृजातीय के किसी भी विभेद का निषेध का सिद्धान्त :–

भारत की विदेश को नीति जातिभेद तथा रंगभेद के प्रत्येक रूप का विरोध करती है। दक्षिण अफ्रीका रंगभेद का सबसे घृणित उदाहरण है। रंगभेद के कारण शोशित जनता को भारत ने पूर्ण नैतिक समर्थन प्रदान किया। वर्ष 1949 में भारत ने दक्षिण अफ्रीका के साथ सम्बन्ध विच्छेद कर लिए। विश्व जनमत को रंगभेद की नीति के विरूद्ध तैयार करने में भारत ने महत्वपर्णयोगदान दिया।[11]

शान्तिपूर्ण सह – अस्तित्व का सिद्धान्त :–

शान्तिपूर्ण सह – अस्तित्व का सिद्धान्त भी विदेश नीति का एक प्रमुख सिद्धान्त रहा है। यद्धपि यह पंचशील के सिद्धान्त का ही एक हिस्सा है, परन्तु व्यापक सन्दर्भ में यह भारत में अलग दृष्टि से देखा जा सकता है, क्योंकि शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व द्वारा विश्व में वैचारिक या अन्य किन्हीं आधारों पर स्थापित भेदभाव की मान्यता को अस्वीकार कर सभी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बधों की स्थापना पर बल दिया गया है इसके अतिरिक्त सैन्य गठबन्धनों के संबंध में भी उनके गुट में भागीदारी न करते हुए भी अन्य क्षेत्रों में संबंध विकसित कराने की मनाही नहीं है। शीत युद्ध के समय में साम्यवादी व पूँजीवादी गुटों की सैन्य नीतियों की आलोचना करते हुए भी सीमित स्तर तक आर्थिक, सामाजिक तकनीकी, सांस्कृतिक आदि संबंधों का विकास जारी रखा। इस प्रकार विश्व शान्ति व विकास की सभी प्रक्रियाओं में सभी राष्ट्रों से मित्रतापूर्वक एवं सद्भावना पर आधारित संबंधों पर बल दिया गया।[12]

विदेश नीति के प्रमुख निर्धारक तत्व :–

भौगेलिक कारक :–

भौगोलिक कारक जैसे कि देश की अवस्थिति, आकार तथा प्राकृतिक संसाधन एवं जनसंख्या आदि विदेश नीति के निर्णायक तत्व होते है जो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में किसी राष्ट्र की राजनीति का निर्धारण करके उसकी विदेश नीति को साकार रूप देते है। [13]

आर्थिक विकास :–

किसी भी देश की विदेश नीति में सुरक्षा व प्रभुसत्ता के बाद आर्थिक विकास का मुख्य योगदान रहा है। भारत भी इस दृष्टि से अपवाद नहीं है। स्वतंत्रता के बाद जहाँ राष्ट्रीय सुरक्षा भारत की प्रभुसत्ता, एकता व अखण्डता महत्वपूर्ण रही है वहीं अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आर्थिक विकास एक महत्वपूर्ण पहल है। विदेश नीति अपनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि कि इसका आर्थिक संदर्भ भी स्पष्ट रूप से उजागर रहे। अतः आर्थिक विकास भारतीय विदेश नीति का एक मुख्य निर्धारक तत्व रहा है।[14]

राजनीतिक परम्पराएँ :–

किसी भी देश की विदेश नीति उसके राजनीतिक इतिहास व परम्पराओं से, अत्यधिक प्रभावित होती है। यह बात भारत जैसे देश के लिए अति उपयुक्त है, क्योंकि भारत की अपनी एक सभ्यता रही है तथा इसका एक लम्बा स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास रहा है जिनका प्रभाव यहाँ अति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।[15]

घरेलू वातावरण :–

किसी देश के घरेलू वातावरण एवं विदेश नीति में घनिष्ठ संबंध होता है विदेश नीति कई अन्य वस्तुओं की तरह घर से ही प्रारम्भ होती है।[16]

सैन्य क्षमता :–

किसी भी देश की विदेश नीति के निर्धारण में सैन्य क्षमता तंत्र भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है।[17]

विदेश नीति के उद्देश्य को प्राप्त करने एवं नीति निर्माताओं की स्वतंत्रता को बनाए रखने में सैनिक शक्ति को किसी भी राष्ट्र की शासन प्रणाली का आधार माना जाता है।[18]

राष्ट्रीय दर्शन :–

विश्व शान्ति की स्थापना उपनिवेश विरोधी संघर्ष लोकतांत्रिक तथा धर्मनिरपेक्षता एवं शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व के प्रति वचनवद्धता आदि दार्शनिक मूल्य है, जिसकी उत्पत्ति भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हुई थी।[19]

व्यक्तित्व :–

व्यक्तिगत तानाशाहा को छोड़कर प्रजातांत्रिक पद्धतियों में नीति–निर्माताओं का नीति निर्धारण में कितना व्यक्तिगत योगदान होता है। यह पूर्णतया स्थापित करना कठिन है। यह बात अवश्य है कि कुछ प्रजातांत्रिक प्रणालियों में भी यदि प्रधानमंत्री राजनीतिक रूप से बहुत शक्तिशाली हो या चमत्कारिक व्यक्तित्व वाला हो तो विदेश नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।[20]

क्षेत्रीय वातावरण अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण, अतर्राष्ट्रीय संगठन अन्य वाह्य निर्धारक तत्वों के रूप में रहते है।[21]

भारतीय विदेश नीति निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन निम्न लिखित शीषकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :–

- संसद
- प्रधानमंत्री एवं मंत्रीमण्डल
- राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद
- विदेश मंत्रालय
- गुप्तचर अभिकरण[22]

आलोचनाएँ :–

- संस्थागत विकास का अभाव रहा है।
- विदेश सेवाओं का संस्थागत विकास पूर्ण रूप व उपयुक्त आधार पर नहीं हुआ।
- विदेश नीति निर्माण की एक अन्य महत्वपूर्ण कमी सरकार की इस संदर्भ में तद्‌र्थता की नीति अपनाना रहा है। इस तद्‌र्थता की नीतियों के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत सम्पकों, मंत्रालयों के बीच संघर्ष टीम भावना का अभाव तथा विदेश योजनावद्ध विकास के उल्लघंन को बढ़ावा।
- भारतीय विदेश नीति निर्माण प्रक्रिया में एक गम्भीर समस्याँ अति गोपनीयता की नीतियों के कारण होती है आदि[23]

वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति :–

इसका वर्णन निम्नलिखित बिंदुओं के अन्तर्गत किया जा सकता है।

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता प्राप्त करना तथा इसके पुर्नगठन का वर्णन करना।
- परमाणु शक्ति के रूप में भारत की छविको पेश करना।
- भारत को एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभारना।
- C.T.B.T. को न्यायपूर्ण बनाना।
- विदेशों में सुदृढ़ मित्रों की तलाश/विदेश यात्राआें का दौर।
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ विश्व जनमत तैयार करना।
- दक्षिण एशिया का नेतृत्व और प्रतिनिधित्व।
- अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए प्रयास करने की नीति।
- नाम (NAM) की प्रांसगिकता को बनाए रखना।
- भारत पाकिस्तान संबंधों में सुधार के प्रयत्न।[24]

भारत ने अपनी विदेश नीति के सफल प्रयासों के कारण ही पड़ोसी देशों क्षेत्रीय संगठनों के मध्य मजबूत पहचान बनाई है और वर्तमान में विश्व शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर है। प्राचीन काल से भारत का सिद्धान्त 'वसुधव कुटुम्बकम' रहा है इसके अतिरिक्त पंचशील नाम तथा विदेश नीति में बदलाव ने भारत को अपनी पहचान बनाने में सहायता की है। वर्तमान में आसियान में भारत की स्थिति मजबूत हुई है तथा शंघाई सहयोग संगठन (एससीओं) में जून 2017 में भारत को

पूर्ण सदस्य का दर्जा प्राप्त हुआ है जो भारत की विदेशी नीति की कुटनीति सफलता को दर्शाता है। इसके साथ ही भारत के द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सम्बन्ध भी सफल साबित हुआ है।

भारत को वैश्विक पटल पर कई सफलताएं प्राप्त हुई है जैसे जून 2016 में भारत का एमटीसीआर का 35वां सदस्य बनाना, भारत के दलवीर सिंह भण्डारी का नवम्बर 2017 में पुनः इण्टरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस में जज का बनना महत्वपूर्ण है। दिसम्बर 2017 में भारत और ईरान के सहयोग से ईरान में चाबहार बन्दरगाह का उद्घाटन महत्वपूर्ण सफलता है। इससे सेन्ट्रल तथा मध्य एशिया के मध्य सम्बन्ध बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त 19 जनवरी 2018 को भारत को आस्ट्रेलिया ग्रुप का सदस्य बनना भी एक प्रमुख कामयाबी है भारत वर्तमान में किसी महाशक्ति के साथ ही केवल सम्बन्ध न बनाकर विश्व के सभी देशों के साथ समन्वयपूर्वक सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

इस प्रकार भारत ने अपनी विदेश नीति में बदलाव करते हुए विश्व के देशों संगठनों (डब्ल्यूटीओं) क्षेत्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं (आईएमएफ) के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किए है। भारत की इस बढ़ती सफलता के परिणाम स्वरूप ही इसे एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में देखा जा रहा है। इसके बावजूद हमें अपनी विदेश नीति के निर्धारण में जान एफ कैनेडी के इस कथन को ध्यान में रखना चाहिए। ''घरेलू नीतियों की गल्तियाँ हमें डरा सकती है, जबकि विदेशी नीतियों की गल्तियाँ हमारी जान ले सकती है।''[25]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डांलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसो पेज नं. 1
2. 1 वाला पेज नं. 1
3. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजीत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं. 427
4. जैन योगेश चन्द्र, अरिहन्त निबन्धमाला अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इंडिया) लिमिटेड पेज नं. 159
5. जैन योगेश चन्द्र, अरिहन्त निबन्धमाला अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इंडिया) लिमिटेड पेज नं. 159
6. hindilibrarcpindian (यह पेज नं. 4, 5 पर है।)
7. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति पकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 2, एवं mea.gov.in7 outogingvisit-detail-hi
8. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजीत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज 431
9. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजोत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं.431
10. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजोत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं. 431
11. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजोत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं. 431
12. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 21
13. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजोत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं. 432
14. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 27
15. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 30
16. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 31

17. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 35

18. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजोत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं. 432

19. सिंह नागेन्द्र प्रताप, कुमार अजीत, जमन अशरफ एन.टी.ए.यू.जी.सी./नेट/जे. आर. एफ/सेट राजनीति विज्ञान–2, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड पेज नं. 432

20. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 36

21. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 25

22. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 48

23. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीति प्रकाशक, डॉलिंग किडरस्ले (इंडिया) प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन एजुकेशन के लायसेंसी पेज नं. 64, 65

24. hindilibraryindia.com

25. जैन योगेश चन्द्र, अरिहन्त निबन्धमाला अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इंडिया) लिमिटेड पेज नं. 161